Class – T.D.C Part I
Paper – II तत्वमीमांसा
(Metaphysics)

डॉ० पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एल० कॉलेज

भौतिकवाद
(Materialism)

यह एक तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार इस विश्व में पाये जाने वाले सभी जड़-चेतन पदार्थों की उत्पत्ति भौतिक द्रव्य (Matter) से हुई है। इस विश्व के जड़ पदार्थ (जैसे – बर्त्तन, कलम, हथौड़ा आदि) हों या चेतन तत्व (जैसे – मन आदि) – इनका मूलाधार भौतिक द्रव्य (Matter) है। यह एक प्रकृतिवादी (Naturalistic) सिद्धान्त है जिसके अनुसार इस विश्व का नियंत्रण एवं संचालन प्रकृति के नियमों द्वारा होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार विश्व की उत्पत्ति एवं उसके संचालन का कोई उद्देश्य या लक्ष्य नहीं होता है। विश्व एक मशीन है। इसलिए यह सिद्धान्त यन्त्रवादी (Mechanistic) कहा जाता है। इसके अनुसार विश्व के संचालन में किसी आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता नहीं है और न ही किसी उच्च स्तरीय नैतिक मूल्यों की।

भौतिक द्रव्य के स्वरूप के विषय में इस सिद्धान्त के समर्थकों के बीच कोई एक मत नहीं है और उनके विचार काल-क्रम से बदलते भी रहे हैं। फिर कुछ बिन्दुओं पर उनके मत एक हैं। ये हैं—

(1) हम अपने अनुभव में जिन जड़-पदार्थों को देखते हैं, वे वास्तव में मूलभूत भौतिक द्रव्य नहीं हैं, बल्कि उससे निर्मित हैं। मूलभूत तत्व उस वस्तु में विद्यमान होता है।

(2) भौतिक पदार्थ का देश (Space) एवं काल (Time) में फैलाव (Extension) होता है। अतः यह स्थान घेरता है।

(3) मूल भौतिक तत्व नित्य या स्थायी होता है, किन्तु उससे निर्मित पदार्थ परिवर्तनशील एवं अनेक होते हैं।

(4) भौतिक पदार्थ की उत्पत्ति या उसके निर्माण का अर्थ है — उसके विभिन्न भागों का एक-साथ जुड़ जाना तथा विनाश का अर्थ उसके विभिन्न भागों का बिखर जाना है। भौतिकवादी यह मानते हैं कि ये जड़-पदार्थ मूल रूप में अणु हैं जो अविभाज्य तथा संख्या में अनन्त (Infinite) हैं।

आधुनिक विज्ञान यह मानता है कि ये अणु रूप जड़-पदार्थ भी विभाज्य हैं जो गतिशील शक्तियों के संचित रूप हैं। विश्व की सम्पूर्ण शक्ति विनाशरहित है जिसकी न तो वृद्धि होती है और न ही ह्रास होता है। इस शक्ति का केवल रूपान्तरण होता है, दूसरी शक्ति या ऊर्जा रूप में। इसप्रकार ये जड़-तत्व गति रूप हैं जिसे सीधे इन्द्रियों द्वारा न तो देखा जा सकता है और न ही स्पर्श किया जा सकता है। इसका ज्ञान सूक्ष्म वैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा सम्भव है।

<u>भौतिकवाद के समर्थक प्रमाण</u> — इस विश्व का मूल आधार एकमात्र भौतिक तत्व है और उसी से सब कुछ उत्पन्न हुआ है। इसके समर्थन में अनेक प्रमाण दिये गये हैं। ये हैं —

(1) इस सिद्धान्त का सबसे बड़ा प्रमाण हमारा दैनिक अनुभव है। शरीर पूर्णतः भौतिक है जिसका हमें अनुभव होता है। इससे पृथक् मन, आत्मा आदि का साक्षात् अनुभव नहीं होता। शरीर का भरण-पोषण भी अन्न, जल आदि के द्वारा होता है जो भौतिक तत्व है।

(2) आधुनिक मनोविज्ञान भी यह स्पष्ट करता है कि मन नामक कोई स्वतन्त्र तत्व नहीं है, बल्कि यह हमारे स्नायु-मंडल के ही एक अंग मस्तिष्क (Brain) से उत्पन्न है। इसलिए मन को एक पृथक् कोटि स्वीकार करना सम्भव नहीं है।

(3) मन की प्रसन्नता भी शरीर पर निर्भर करती है। एक अस्वस्थ लगभग शरीर की मानसिक दशा ठीक नहीं होती, बल्कि मजबूत एवं स्वस्थ शरीर में ही मन स्थिर एवं आत्म-विश्वासयुक्त होता है। इसलिए शरीर ही प्रमुख है जो जड़-तत्त्व से निर्मित है।

(4) मन या चेतना की अनुभूति सदैव शरीर से जुड़कर होती है। शरीर से रहित मन या चेतना का अनुभव कभी नहीं होता, इसलिए शरीर या भौतिक तत्त्व ही प्रधान है। मन की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है।

(5) विज्ञान भी भौतिकवाद का समर्थन करता है। इसके अनुसार पृथ्वी एवं अन्य ग्रह-उपग्रहों की रचना एक धधकते हुए अग्नि पिण्ड के टूटने से हुई है। पृथ्वी के इस अंश के शीतल होने पर जीव एवं जीवन का विकास हुआ। इसलिए मूल तत्त्व अग्नि है, जो भौतिक स्वरूप है।

(6) भौतिकवाद का समर्थन शक्ति की अनश्वरता का नियम (Law of Conservation of Energy) भी करता है। विश्व में शक्ति या ऊर्जा की कुल मात्रा स्थिर एवं विनाशरहित है, भले-ही इसके स्वरूप में परिवर्तन हो। यदि भौतिक तत्त्व से भिन्न किसी मन या चेतन तत्त्व को स्वीकार किया जाये, तो कुल ऊर्जा में वृद्धि होगी, किन्तु ऐसा मानना इस नियम का उल्लंघन होगा। इससे स्पष्ट है कि भौतिक ऊर्जा से भिन्न कोई चैतन्य नहीं होता।

(7) व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक (Behaviourists) यह मानते हैं कि सभी प्रकार की बाह्य या आन्तरिक मानसिक क्रियाओं की व्याख्या शरीर या भौतिक स्तर पर की जा सकती है। जैसे— स्मृति, संवेदना आदि सभी मनोभावों को भौतिक रूप में स्पष्ट किया जा सकता है। ये केवल आन्तरिक एवं बाह्य शारीरिक व्यवहार हैं।

भौतिकवाद का विकास — भौतिकवाद के इतिहास को यदि देखा जाये, तो पश्चिमी दर्शन में इसके उदाहरण सर्वप्रथम

ग्रीस (यूनान) में मिलते हैं। यूनान में माइलेशियन दल के तीन प्रमुख
विचारकों ने जड़ को मौलिक तत्व माना है। ये हैं — थेल्स (Thales)
एनेक्जिमेण्डर (Anaximander) तथा एनेक्जिमेनीज (Anaximenes)।
इनमें थेल्स ने 'जल' को मूल तत्व माना है जिससे सम्पूर्ण विश्व की
उत्पत्ति होती है तथा उसी में स्थित होकर यह विलीन हो जाता है। उसी-
प्रकार एनेक्जिमेनीज ने 'वायु' को मूल तत्व कहा, किन्तु
एनेक्जिमेंडर ने निर्विशेष एवं अनन्त को मौलिक रूप माना है।
इसका कोई स्वरूप नहीं होता, किन्तु यह जड़ ही है।
ग्रीक भौतिकवादी विचारकों बाद में हेराक्लिटस
(Heraclitus) का नाम आता है जिन्होंने 'अग्नि' को मूलभूत
जड़-तत्व स्वीकार किया। बाद में एम्पिडोक्लस (Empedocles) हुए
जिन्होंने चार मौलिक तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि एवं वायु) को
मौलिक पदार्थ माना। इन तत्वों के संयोग-वियोग पर सृष्टि
एवं विनाश निर्भर करता है। कोई एक तत्व से विश्व की
उत्पत्ति नहीं हो सकती और न ही उनका विनाश।
भौतिकवाद का सर्वाधिक विकसित रूप ग्रीक विचारकों
में डेमोक्राइटस (Democritus) में दिखलायी पड़ता है। उनके
अनुसार विश्व का आधारभूत तत्व परमाणु (Atom) है
जो परिमाण (Quantity) की दृष्टि से अलग-अलग होता है, किन्तु
गुणात्मक (Quality) रूप से सभी समान होते हैं। इन परमाणुओं
की संख्या अनन्त (Infinite) है जो स्वाभाविक रूप से गतिशील हैं।
आन्तरिक गति से युक्त इन परमाणुओं के संयोग से उत्पत्ति होती
है तथा जब ये परमाणु अलग हो जाते हैं, तो विनाश हो जाता है।
ग्रीक दर्शन में एपिक्यूरस (Epicurus) का नाम भी भौतिक-
वादी विचारकों में आता है। उन्होंने मूल तत्व को जड़-स्वरूप
माना है तथा उसमें भार (Weight) तथा इच्छा-स्वातन्त्र्य (Free Will)
को भी स्वीकार किया है। नैतिकता के क्षेत्र में उन्होंने स्वार्थपरतावादी
सुखवाद (Egoistic Hedonism) का समर्थन किया है।
आधुनिक युग में भौतिकवाद के समर्थकों में
लामेत्री (La Matterie), हेकेल (Haeckel), बुकनर (Buchner)
कार्ल मार्क्स (Karl Marx) आदि कई विचारकों के

नाम प्रमुख है। कार्ल मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक विकासवाद (Dialectical Evolution) का सिद्धान्त दिया है। इसमें उन्होंने बतलाया है कि जड़ तत्व के विकास-क्रम में एक निश्चित स्तर पर उसके गुण परिवर्तित हो जाते हैं और नये गुण के रूप में जीवन एवं चेतना (Consciousness) की उत्पत्ति होती है। इसे मार्क्स ने गुणात्मक परिवर्तन का नियम (Law of the Transition of Quantity into Quality) कहा है। भौतिकवाद के क्षेत्र में सबसे बड़ा बदलाव भौतिकशास्त्रियों (Physicists) के द्वारा हुआ। आधुनिक युग में जड़-तत्व, गति या शक्ति में कोई अन्तर नहीं माना जाता। परमाणु के असंख्य अंश इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन आदि रूपों में शक्ति के मूल आधार हैं।

भारतीय विचारधारा में भौतिकवाद का एकमात्र उदाहरण चार्वाक दर्शन में पाया जाता है। इसके अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि एवं वायु — इन चार मूलभूत भौतिक तत्वों के द्वारा वस्तुओं की रचना होती है तथा इनके विखण्डन से विनाश होता है। चार्वाक के अनुसार इन चारों तत्वों के संयोग से चेतना की उत्पत्ति होती है, उसी रूप में जैसे पान, चूना, कत्था, सुपारी आदि के एक-साथ मिलने पर लाल रंग उत्पन्न होता है। भारतीय दर्शन में इस सम्प्रदाय के अतिरिक्त जैन एवं सांख्य दर्शन में भी जड़-तत्व की चर्चा है। किन्तु इन दर्शनों में विश्व की रचना के लिए जड़ को एक तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है, न कि मूलभूत तत्व के रूप में। इसलिए जैन एवं सांख्य दर्शन भौतिकवादी नहीं है।

समीक्षा — भौतिकवादी सिद्धान्त की अनेक विशेषताएँ हैं, किन्तु यह विश्व एवं जीवन की पूर्ण व्याख्या करने में सफल नहीं है। इस सिद्धान्त के अनेक दोष हैं—

(1) सर्वप्रथम तो जड़-तत्व का स्वरूप ही स्पष्ट नहीं है। भौतिकवादी सिद्धान्त में जड़-तत्व को ठोस माना गया,

उसे स्पर्शयुक्त कहा गया। किन्तु बाद में इसका जो स्वरूप बतलाया गया, उससे जड़वाद का मूल रूप ही समाप्त होता दिखायी पड़ता है।

(2) मार्क्स के जड़वाद में यह कहा गया है कि जड़-तत्व का गुण एक निश्चित स्तर पर चेतना के गुण में परिवर्तित हो जाता है। वैसे-ही, यह भी कहा जा सकता है कि चेतन-तत्व का गुण एक निश्चित स्तर पर जाकर जड़ में परिवर्तित हो जाता है। इसप्रकार मूल तत्व के द्वारा विश्व-संरचना की स्पष्ट व्याख्या नहीं हो पाती।

(3) जिसप्रकार शरीर का प्रभाव मन पर पड़ता है, वैसे-ही मन का प्रभाव भी शरीर पर पड़ता है। जैसे— पाचन-समस्या, स्वास्थ्य का गिरना आदि अनेक समस्याएँ मन से भी उत्पन्न होती हैं। अतः शरीर को ही गौण एवं मन को मुख्य माना जा सकता है तथा कहा जा सकता है कि चेतना या मन ही आधारभूत तत्व है।

इससे स्पष्ट है कि भौतिकवाद जैसे तत्व-मीमांसीय सिद्धान्त के द्वारा विश्व एवं जीवन की व्याख्या पूर्ण एवं सटीक रूप में नहीं हो पाती।

———X———X———